© 2019 IJRAR June 2019, Volume 6, Issue 2 www.ijrar.org (E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138)

"भारत में ई–गवर्नेंस का विकास, उपयोगिता एवं चुनौतियाँ"

डॉ. श्रद्धा गर्ग
सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान विभाग)
गुरूघासीदास (केन्द्रीय)विश्वविद्यालय,
बिलासपुर (छ.ग.)

ई–गवर्नेंस वर्तमान समय की एक नई अवधारणा के रूप में विकसित हुई है। ई–गवर्नेंस को सरकारी अभिकरणों द्वारा सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, विशेष रूप से इंटरनेट आधारित सूचना और प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के रूप मे परिभाषित किया जा सकता है। जिसका उद्देश्य सरकार की दक्षता, प्रभावकारिता, पारदर्शिता और जवाबदेही में वृद्धि करना है।

भारत में ई–गवर्नेंस का जन्म 1970 के दशक में प्रतिरक्षा, आर्थिक निगरानी, योजना के क्षेत्रों में आंतरिक अनुप्रयोगों पर फोकस के साथ चुनावों, जनगणना, टैक्स प्रशासन इत्यादि से जुड़े डाटा–संघनित प्रकार्यों के प्रबंधन के लिए सूचना और संचार टैक्नोलॉजी को प्रतिनियुक्त करने से हुआ। इसके बाद ई–गवर्नेंस का विकास 1980 के दशक में, "राज्य व्यापी एरिया नेटवर्क"के रूप में हुआ। 1990 के दशक के बाद राष्ट्रीय तथा राज्य सरकारों द्वारा इन्टरनेट सहित बैव आधारित टेक्नोलॉजी एवं सूचना और संचार टेक्नॉलॉजी प्रणाली को अपनाने से भारत ई–गवर्नेंस का अधिक विकास हुआ।

भारत में प्रशासनिक पारदर्शिता की दिशा में एक कांतिकारी कदम सूचना का अधिकार (आर.टी.आई) ई–गवर्नेंस का ही परिणाम था। ई–गवर्नेंस का प्रशासन के अन्य क्षेत्रों में उपयोग उल्लेखनीय है, जैसे कम्प्यूटर के द्वारा बिल भुगतान, सड़क पर यातायात एवं आयात एवं निर्यात का समुचित प्रबंधन, कर्मचारियों के सामाजिक सुरक्षा उपायों को अधिक प्रभावीकरण, बिल के भुगतान में अधिक वास्तविकता एवं वस्तुनिष्ठता तथा विभागों में अपनी शिकायत दर्ज कराना, भारत ई–गवर्नेंस की उपयोगिता प्रमाणित करता है।

भारत में सरकार में ई–गवर्नेंस का उसका कई चुनौतियों से घिरा हुआ है। ये चुनौतियाँ भिन्न रूपों में सामने आयी हैं, जिनमें प्रमुख रूप से तकनीकि, संस्थागत, संगठनात्मक, चुनौतियाँ प्रमुख हैं।

भारत में ई–गवर्नेंस जनआकांक्षाओं के राष्ट्रीय आदर्शों और उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सक्षम विकास और प्रभावपूर्ण शासन पद्धतियों के विकास के लिए आवश्यक है। इसलिए प्रशासन में ई–प्रशासन का उपयोग अधिक से अधिक होना चाहिए।

ख्य शब्द– ई–प्रशासन, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, आर.टी.आई.।

समाज के परिपूर्ण विकास के लिए एक आवश्यक एवं महत्वपूर्ण स्तम्भ है। मानव के सामाजिक प्राणी बनने में सूचना ने युतंत्र की भूमिका अदा की है। आदिम युग में जब मानव अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिए संघर्षरत था तो सूचना ने उसे एकजुट सामाजिक प्राणी बनाया। उसने सूचनाओं का आदान–प्रदान करके अपने जीवन को सुरक्षित व उद्देश्यपूर्ण बना ा। सूचनाओं का प्रसार एक गांव से दूसरे गांव, एक जगह से दूसरी जगह तक होते–होते, धीरे–धीरे सम्पर्ण विश्व तक होने गया। आज सभी नागरिक सूचना के बड़े महामार्गो से जुड़ गए हैं। इन महामार्गो पर स

Scanned by TapScanner